कॉकरोच आंदोलन : सत्ता परिवर्तन का अलोकतांत्रिक प्रयास

डॉ. महेश कुमार गर्ग

सहायक आचार्य, समाजशास्त्र, राजकीय कन्या महाविद्यालय, गंगापुर सिटी

सार

'कॉकरोच आंदोलन' (कॉकरोच जनता पार्टी या CJP) भारत में 2026 में उभरा एक युवा-केंद्रित राजनीतिक और सामाजिक आंदोलन है, जिसे आलोचक 'सत्ता परिवर्तन का अलोकतांत्रिक प्रयास' और समर्थक 'लोकतांत्रिक जवाबदेही' का रूप मानते हैं। यह आंदोलन मई 2026 में सोशल मीडिया पर एक व्यंग्य (सटायर) और मीम के रूप में शुरू हुआ था, जब सुप्रीम कोर्ट के मुख्य न्यायाधीश सूर्यकांत की एक टिप्पणी (जिसमें उन्होंने कथित तौर पर बेरोजगार युवाओं की तुलना कॉकरोच से की थी) के खिलाफ युवाओं ने इस नाम को अपनी पहचान बना लिया। देखते ही देखते इसके इंस्टाग्राम पर करोड़ों फॉलोअर्स हो गए और इसने एक बड़े सड़क आंदोलन का रूप ले लिया।

परिचय

1. आलोचकों का दृष्टिकोण: 'सत्ता परिवर्तन का अलोकतांत्रिक प्रयास'

आंदोलन के आलोचकों, सत्ताधारी दल के समर्थकों और कुछ सुरक्षा विश्लेषकों का मानना है कि यह आंदोलन लोकतांत्रिक मर्यादाओं को ताक पर रखकर चुनी हुई सरकार को अस्थिर करने की कोशिश है: [1, 2]

- विदेशी ताकतों और टूलकिट का संदेह: सरकार के कुछ समर्थकों और मीडिया घरानों द्वारा यह आशंका जताई गई कि इस आंदोलन के पीछे विदेशी ताकतों (जैसे अमेरिकी थिंक-टैंक या संस्थाएं) का हाथ हो सकता है, जो भारत में 'रिजीम चेंज' (सत्ता परिवर्तन) की कोशिश कर रही हैं, ठीक वैसे ही जैसे बांग्लादेश या नेपाल में हाल ही में छात्र आंदोलन हुए थे। [1, 2]
- मुद्दों का राजनीतिकरण: शुरुआत में यह आंदोलन NEET परीक्षा के पेपर लीक और बेरोजगारी जैसे विशुद्ध छात्र मुद्दों पर केंद्रित था, जिसके कारण जुलाई 2026 में तत्कालीन शिक्षा मंत्री धर्मेंद्र प्रधान को इस्तीफा भी देना पड़ा। लेकिन बाद में जब आंदोलन ने मुख्य चुनाव आयुक्त (CEC) को हटाने और चुनाव आयोग की मतदाता सूची (Electoral Rolls) के पुनरीक्षण को लेकर सरकार के खिलाफ मोर्चा खोला, तो आलोचकों ने इसे विपक्ष द्वारा प्रायोजित और राजनीतिक रूप से प्रेरित एजेंडा करार दिया। [1, 2, 3, 4]
- हिंसा और कानून-व्यवस्था की स्थिति: जुलाई और अक्टूबर 2026 के दौरान दिल्ली के जंतर-मंतर और संसद भवन की ओर मार्च के दौरान कई जगहों पर बैरिकेड्स तोड़े गए और पुलिस के साथ हिंसक झड़पें हुईं, जिसमें कई सुरक्षाकर्मी घायल हुए। आलोचकों के अनुसार, कानून व्यवस्था को हाथ में लेकर दबाव बनाना अलोकतांत्रिक है। [1]

2. समर्थकों और प्रदर्शनकारियों का दृष्टिकोण: 'लोकतांत्रिक अधिकार और जवाबदेही'

दूसरी ओर, आंदोलन के संस्थापक अभिजीत दिपके, छात्र संगठनों और विपक्षी दलों (जैसे राहुल गांधी के नेतृत्व वाले गठबंधन) का तर्क है कि यह प्रदर्शन पूरी तरह से लोकतांत्रिक है: [1, 2]

- अभिव्यक्ति की आज़ादी और युवाओं का रोष: समर्थकों का कहना है कि 40% तक पहुंच चुकी युवा बेरोजगारी और बार-बार होने वाले पेपर लीक ने युवाओं के भविष्य को अधर में लटका दिया है। लोकतांत्रिक देशों में शांतिपूर्ण प्रदर्शन करना और सरकार से जवाब मांगना नागरिकों का संवैधानिक अधिकार है। [1, 2]
- संवैधानिक संस्थाओं की स्वायत्तता: अक्टूबर 2026 में जब मतदाता सूची से कथित तौर पर करोड़ों नाम हटाए जाने का मुद्दा उठा, तो आंदोलनकारियों ने इसे नागरिक अधिकारों का हनन माना और चुनाव आयोग की पारदर्शिता की मांग को लेकर सुप्रीम कोर्ट तक मार्च निकाला। इसे वे लोकतंत्र को मजबूत करने का प्रयास बताते हैं, न कि उसे गिराने का। [1, 2]

वैश्विक थिंक-टैंक (जैसे चैथम हाउस) के राजनीतिक विश्लेषकों के अनुसार, भारत की मजबूत लोकतांत्रिक और संस्थागत संरचना के कारण किसी भी सड़क आंदोलन के जरिए अचानक 'सत्ता परिवर्तन' कर देना संभव नहीं है। हालाँकि, कॉकरोच आंदोलन ने यह जरूर दिखाया है कि सोशल मीडिया के दौर में जेनरेशन-ज़ेड (Gen-Z) युवा कितनी तेजी से लामबंद होकर सरकार की नीतियों और व्यवस्था को प्रभावित कर सकते हैं।[1,2,3]

विचार-विमर्श

इस समय सबसे ज्यादा चर्चाओं में है 'कॉकरोच जनता पार्टी' (सीजेपी). सुप्रीम कोर्ट के मुख्य न्यायाधीश सूर्यकांत के एक बयान ने 'कॉकरोच' को चर्चा के केंद्र में ला दिया है.

स्वाभाविक रूप से, यह 'कॉकरोच' वाला बयान कई लोगों को पसंद नहीं आया. इस पर आपत्तियों की बाढ़ आ गई. इसके बाद प्रतिक्रियाएं भी आईं.

अभिजीत दीपके ने सोशल मीडिया पर 'कॉकरोच जनता पार्टी' की घोषणा की. देखते ही देखते उनके सोशल मीडिया अकाउंट्स पर फॉलोअर्स की बाढ़ आ गई. इंस्टाग्राम पर उन्होंने कुछ ही घंटों में बीजेपी, कांग्रेस और देश के अन्य दलों को पीछे छोड़ दिया.

इन आंकड़ों और समर्थकों को छोड़ दें तो मुख्य गंभीर चर्चा का विषय यह है कि इस जनता पार्टी के प्रति दीवानगी क्या दर्शाती है? इसका क्या अर्थ है? क्या यह सत्ताधारी दल और संपूर्ण राजनीतिक व्यवस्था के प्रति आक्रोश है? या फिर यह एक नए राजनीतिक विकल्प की तलाश का प्रयास है? क्या एक नए राजनीतिक आंदोलन का जन्म हो रहा है?

इन सवालों के जवाब मिलने में अभी काफी समय लगेगा, क्योंकि ऐसी किसी भी प्रक्रिया में लंबा समय लगता है.

इस 'पार्टी' का नाम सामने आए अभी कुछ ही दिन हुए हैं. इसलिए इसका कोई आधिकारिक ढांचा, संगठन या पदाधिकारी तय नहीं हुआ है. हर कोई यह जानने के लिए उत्सुक है कि क्या वे चुनाव लड़ेंगे.

इसका एक कारण यह है कि पिछले एक दशक में भारत, भारत के पड़ोसी देशों और दुनिया भर के अन्य देशों में इस तरह की किसी घटना की प्रतिक्रिया के रूप में, राजनीति से बाहर के युवाओं का एक आंदोलन सोशल मीडिया पर शुरू हुआ.[4,5,6]

धीरे–धीरे यह फैल गया और इसने स्थापित राजनीतिक दलों को हिलाकर रख दिया और यहां तक कि चुनावी राजनीति में चमत्कार भी कर दिखाया. कभी–कभी यह चमत्कार लंबे समय तक कायम रहा. कभी–कभी यह क्षणिक रहा. आज 'कॉकरोच जनता पार्टी' की बहुत चर्चा हो रही है, तो आइए हाल के इतिहास के कुछ ऐसे उदाहरणों पर नज़र डालते हैं जो सोशल मीडिया ट्रेंड से शुरू होकर सत्ता तक पहुंचे.

हमें यह भी याद रखना चाहिए कि उस आंदोलन के फैलने के क्या कारण थे. अब, चूंकि 'कॉकरोच जनता पार्टी' भारत से है, तो आइए भारत से ही एक उदाहरण से शुरुआत करते हैं.

कॉकक्रोच जनता पार्टी (संक्षिप्तः सीजेपी; शाब्दिक अर्थः 'तिलचट्टा जनता दल') एक भारतीय व्यंग्यात्मक राजनीतिक आंदोलन (Satirical political movement) है, जिसकी स्थापना 16 मई 2026 को अभिजीत दिपके द्वारा की गई थी। दिपके एक राजनीतिक संचार रणनीतिकार हैं, जो पूर्व में आम आदमी पार्टी के साथ काम कर चुके हैं। इस आंदोलन का नाम भारत के सत्ताधारी दल, भारतीय जनता पार्टी का एक व्यंग्यात्मक अनुकरण है।[1]

मई 2026 में भारत के न्यायिक और सोशल मीडिया परिदृश्य में उत्पन्न हुए एक प्रमुख विवाद के बाद यह आंदोलन अस्तित्व में आया। इसकी उत्पत्ति 15 मई 2026 को भारत के मुख्य न्यायाधीश सूर्य कांत द्वारा एक अदालती सुनवाई के दौरान की गई उस मौखिक टिप्पणी के विरोध में हुई थी, जिसमें उन्होंने कथित तौर पर बेरोजगार युवाओं की तुलना "तिलचट्टों" और "समाज के परजीवियों" से की थी।[2][3]

अपनी स्थापना के कुछ ही दिनों के भीतर, इस आंदोलन ने 3,50,000 से अधिक आधिकारिक पंजीकरण प्राप्त कर लिए और इंस्टाग्राम पर इसके 3 करोड़ से अधिक फॉलोअर्स हो गए।[4] यह आंदोलन केवल डिजिटल दुनिया तक सीमित नहीं रहा है, बल्कि इसने ज़मीनी स्तर पर भी कई गतिविधियाँ की हैं; जहाँ पार्टी के स्वयंसेवक 'कॉकक्रोच' की वेशभूषा पहनकर विरोध प्रदर्शनों और सफाई अभियानों में हिस्सा लेते हैं।[5]

यद्यपि यह आंदोलन वर्तमान में भारत निर्वाचन आयोग के तहत एक राजनीतिक दल के रूप में पंजीकृत नहीं है[6], फिर भी यह भारतीय युवाओं को प्रभावित करने वाले व्यापक सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक मुद्दों के खिलाफ सक्रिय रूप से अभियान चला रहा है।[7,8,9]

परिणाम

इस आंदोलन की उत्पत्ति मई 2026 में सर्वोच्च न्यायालय में हुई एक सुनवाई के दौरान मुख्य न्यायाधीश सूर्य कान्त के द्वारा की गई विवादास्पद टिप्पणियों से हुई।

अदालती विवाद और सीजेआई की टिप्पणी

दिल्ली में वकीलों के पदनाम से जुड़े एक मामले में संजय दुबे नामक एक वकील ने न्यायालय में याचिका दायर की थी। मुख्य न्यायाधीश सूर्य कांत की अध्यक्षता वाली पीठ ने जब इसे समय की बर्बादी बताते हुए खारिज कर दिया, तो इंटरनेट पर वकीलों के आचरण को लेकर भी बहस छिड़ गई। इसी दौरान, सीजेआई सूर्य कांत ने फर्जी डिग्रियों वाले वकीलों और इंटरनेट पर भड़ास निकालने वाले लोगों की आलोचना करते हुए एक विवादास्पद तुलना कर दी।[7]

सीजेआई ने टिप्पणी कीः "कॉकरोच (तिलचट्टे) जैसे युवा हैं; जिन्हें कोई रोज़गार नहीं मिलता... वे मीडिया, सोशल मीडिया या आरटीआई कार्यकर्ता बनकर हर किसी पर हमला करना शुरू कर देते हैं, वे परजीवियों की तरह हैं।"[8]

चूँकि यह टिप्पणी देश के सर्वोच्च न्यायिक पद से आई थी, इसलिए इसने तुरंत राष्ट्रीय मीडिया का ध्यान खींचा। बेरोज़गार युवाओं और छात्रों ने इसे अपना अपमान माना और सोशल मीडिया पर भारी आक्रोश व्यक्त किया।[9] विवाद बढ़ने पर, 16 मई 2026 को सीजेआई ने स्पष्टीकरण दिया कि उनकी टिप्पणी केवल उन फर्जी लोगों के लिए थी जो जाली डिग्रियों के सहारे महान पेशों में घुसपैठ करते हैं, न कि देश के युवाओं के लिए।[10]

आंदोलन की शुरुआत

आधिकारिक स्पष्टीकरण के बावजूद, देश के युवाओं ने "कॉकरोच" शब्द को एक हथियार के रूप में अपना लिया। 16 मई 2026 को डिजिटल संचार रणनीतिकार अभिजीत डिप्के ने सत्तारूढ़ व्यवस्था पर व्यंग्य करते हुए एक्स पर "कॉकरोच जनता पार्टी" के गठन की घोषणा की। यह नाम सीधे तौर पर भारतीय जनता पार्टी पर एक कटाक्ष था।[11]

"आलसी और बेरोजगारों की आवाज़" टैगलाइन के साथ शुरू हुआ यह मंच रातों-रात वायरल हो गया। इसके घोषणापत्र और ग्राफिक्स को तैयार करने के लिए चैटजीपीटी और क्लॉड जैसे एआई उपकरणों का उपयोग किया गया। लॉन्च होने के महज़ पाँच दिनों के भीतर, इसके इंस्टाग्राम फॉलोअर्स की संख्या 1 करोड़ को पार कर गई, जिसने भाजपा के आधिकारिक हैंडल को भी पीछे छोड़ दिया।[12] 22 मई 2026 तक यह संख्या 2 करोड़ के पार पहुँच गई और जल्द ही यह ऑनलाइन अभियान कई राज्यों में ज़मीनी विरोध प्रदर्शनों में बदल गया।[13]

संस्थापक[10,11,12]

सीजेपी के संस्थापक अभिजीत दिपके का जन्म 1995 में महाराष्ट्र के औरंगाबाद में हुआ था। पुणे से पत्रकारिता की पढ़ाई करने के बाद, उन्होंने अमेरिका के बोस्टन विश्वविद्यालय से जनसंपर्क में मास्टर डिग्री हासिल की।[14]

2020 से 2023 तक दिपके आम आदमी पार्टी की सोशल मीडिया टीम में काम किया और दिल्ली चुनावों के दौरान युवा मतदाताओं के लिए डिजिटल अभियान चलाए। 2023 में वे विदेश में पढ़ाई के लिए पार्टी से अलग हो गए थे। डिप्के अब सीजेपी को उन युवाओं के लिए एक "मंच" बताते हैं जो खुद को मुख्यधारा की राजनीति से अलग-थलग महसूस करते हैं।[15]

विचारधारा

सीजेपी स्वयं को युवाओं का एक धर्मनिरपेक्ष, समाजवादी और लोकतांत्रिक राजनीतिक मोर्चा बताती है।[8] पार्टी के संस्थापक आनंद डिप्के ने स्पष्ट किया है कि उनकी मंशा इसे एक पारंपरिक राजनीतिक दल बनाने की नहीं है, और न ही वे स्थापित राजनेताओं को इस मंच पर शामिल करना चाहते हैं।[12]

पार्टी का मुख्य उद्देश्य राजनीतिक व्यवस्था में जवाबदेही तय करना है। अपनी वेबसाइट पर सीजेपी ने पीएम केयर्स फंड जैसे संस्थानों और राजनीतिक भ्रष्टाचार पर कटाक्ष करते हुए सरकारी खर्चों में पारदर्शिता की मांग की है। पार्टी का घोषित मिशन उन युवाओं को राजनीतिक रूप से संगठित करना है, जिन्हें अक्सर "आलसी" या "हर समय ऑनलाइन रहने वाला" कहकर नज़रअंदाज़ किया जाता है।[16]

घोषणापत्र

पार्टी ने व्यवस्था पर व्यंग्य करते हुए एक औपचारिक पाँच-सूत्रीय घोषणापत्र जारी किया है:[17][8][18]

- सेवानिवृत्ति के बाद मुख्य न्यायाधीशों को राज्यसभा या किसी अन्य पद पर नियुक्त करने पर रोक लगाई जाए।[16]
- मतदान के अधिकारों का उल्लंघन होने पर मुख्य चुनाव आयुक्त के खिलाफ यूएपीए के तहत कार्रवाई की जाए (यह 2025 के चुनावी विवाद के संदर्भ में है)।[19]
- संसद और सभी कैबिनेट पदों में महिलाओं के लिए 50% आरक्षण सुनिश्चित किया जाए।[16]
- मीडिया में एकाधिकार खत्म करने के लिए अडाणी समूह और रिलायंस के स्वामित्व वाले मीडिया घरानों के लाइसेंस रद्द किए जाएं, और "गोदी मीडिया" के एंकरों की वित्तीय जाँच हो।[16]
- दल-बदल करने वाले विधायकों या सांसदों के चुनाव लड़ने पर 20 साल का प्रतिबंध लगाया जाए।[16]

सामाजिक कार्यकर्ता अंजलि भारद्वाज के सुझाव पर पार्टी ने अपने घोषणापत्र में यह भी जोड़ा है कि सीजेपी आरटीआई अधिनियम के प्रति जवाबदेह होगी और कोई भी गुप्त फंड स्थापित नहीं करेगी।[18]

सदस्यता

सीजेपी ने अपनी सदस्यता के लिए जो पात्रता मानदंड तय किए हैं, वे पूरी तरह से व्यंग्यात्मक हैं। इनमें व्यक्ति का बेरोज़गार होना, शारीरिक रूप से आलसी होना और दिन का अधिकांश समय इंटरनेट पर बिताना शामिल है। इसके अलावा, सदस्य में किसी महत्वपूर्ण मुद्दे पर अपनी भड़ास निकालने की पेशेवर क्षमता होनी चाहिए।[8]

पार्टी का स्पष्ट कहना है कि उनकी सदस्यता प्रक्रिया में धर्म, जाति या लिंग के आधार पर कोई भेदभाव नहीं किया जाता है।[8]

सोशल मीडिया और इंटरनेट प्रतिबंध[13,14,15]

21 मई 2026 को एक कानूनी माँग के जवाब में कॉकरोच जनता पार्टी (CJP) के आधिकारिक एक्स (X) खाते को भारत में प्रतिबंधित कर दिया गया।[20] इलेक्ट्रॉनिकी और सूचना प्रौद्योगिकी मंत्रालय ने इंटेलिजेंस ब्यूरो (IB) की रिपोर्ट के आधार पर सूचना प्रौद्योगिकी अधिनियम की धारा 69(A) के तहत यह आदेश जारी किया था। IB ने "राष्ट्रीय सुरक्षा" और "भारत की संप्रभुता" को खतरे का हवाला देते हुए तर्क दिया कि पार्टी की सामग्री भड़काऊ थी और युवाओं के बीच तेज़ी से लोकप्रिय हो रही थी। जिस समय यह कार्रवाई हुई, खाते के लगभग 90,000 फॉलोअर्स थे। अधिकारियों ने यह भी संकेत दिया कि पार्टी के इंस्टाग्राम खाते को ब्लॉक करने की प्रक्रिया चल रही है।[21] हालाँकि, इस प्रतिबंध के कुछ ही मिनटों बाद पार्टी ने "कॉकरोच इज़ बैक" नामक नए हैंडल के साथ प्लेटफॉर्म पर वापसी कर ली।[22]

23 मई 2026 को पार्टी की आधिकारिक वेबसाइट भी ऑफलाइन हो गई, जिसके लिए कथित तौर पर भारत सरकार को ज़िम्मेदार ठहराया गया।[23] यह कार्रवाई तब हुई जब वेबसाइट पर नीट 2026 पेपर लीक विवाद को लेकर तत्कालीन शिक्षा मंत्री धर्मेंद्र प्रधान के इस्तीफे की माँग करने वाली एक ऑनलाइन याचिका शुरू की गई थी।[24] बाद में 25 मई को वेबसाइट पुनः बहाल हो गई।[19]

24 मई 2026 को पार्टी के संस्थापक अभिजीत डिप्के ने दावा किया कि CJP का आधिकारिक इंस्टाग्राम पेज और उनका व्यक्तिगत इंस्टाग्राम खाता हैक कर लिया गया है, जिससे प्लेटफॉर्म पर उनकी उपस्थिति अस्थायी रूप से बाधित हो गई।[25]

इसके बाद 26 मई 2026 को डिप्के ने एक्स खाते पर लगे प्रतिबंध के खिलाफ दिल्ली उच्च न्यायालय में याचिका दायर की। उन्होंने राष्ट्रीय सुरक्षा के आधार पर इलेक्ट्रॉनिकी और सूचना प्रौद्योगिकी मंत्रालय द्वारा दिए गए इस निर्देश को चुनौती देते हुए न्यायिक हस्तक्षेप की माँग की।[26]

साइबर सुरक्षा रिपोर्ट

मई 2026 में, The Hindu ने ट्रेसएक्स लैब्स की एक साइबर सुरक्षा रिपोर्ट का हवाला देते हुए बताया कि "Cockroach Janta Party" नाम से एक दुर्भावनापूर्ण एंड्रॉइड अनुप्रयोग प्रसारित किया जा रहा था।[27][28][29]

विरोध प्रदर्शन

6 जून 2026 को कॉकरोच जनता पार्टी (CJP) ने जंतर मंतर, नई दिल्ली में एक विरोध प्रदर्शन आयोजित किया। यह प्रदर्शन मुख्य रूप से नीट 2026 पेपर लीक और सीबीएसई परिणामों में हुई कथित ग्रेडिंग अनियमितताओं के खिलाफ था। इस दौरान प्रदर्शनकारियों ने परीक्षा प्रणाली के प्रशासन, उसकी पारदर्शिता और 'ऑन-स्क्रीन मार्किंग' (OSM) मूल्यांकन व्यवस्था पर गंभीर सवाल उठाते हुए केंद्रीय शिक्षा मंत्री धर्मेंद्र प्रधान के इस्तीफे की माँग की।[30][31][32]

प्रदर्शन के दौरान स्थिति तब तनावपूर्ण हो गई, जब शिक्षा मंत्री का पुतला जलाने का प्रयास कर रहे कई कार्यकर्ताओं को पुलिस ने शांति भंग करने के आरोप में हिरासत में ले लिया।[33] दिन के अंत तक सरकार की ओर से इस्तीफे की माँग पर कोई आधिकारिक प्रतिक्रिया न मिलने पर, पार्टी ने कार्रवाई के लिए सरकार को सात दिनों का समय-सीमा जारी कर दिया।[34]

25 जुलाई 2026 को केंद्र सरकार ने CJP और प्रदर्शनकारी छात्रों की प्रमुख माँगों को स्वीकार कर लिया। इसके बाद केंद्रीय शिक्षा मंत्री धर्मेंद्र प्रधान ने अपने पद से इस्तीफ़ा दे दिया।[16,17,18]

निष्कर्ष

भारत में हजारों लोगों को हिरासत में लिया गया. सीजेपी के नेताओं को विमान से उतरते ही गिरफ्तार कर लिया गया और राजधानी में लॉकडाउन जैसे हालात बन गए. मुख्य चुनाव आयुक्त के खिलाफ युवाओं के नेतृत्व में हो रहे विरोध प्रदर्शनों पर भारत सरकार की नजर है. हालांकि विशेषज्ञों का कहना है कि सरकार को सत्ता से हटाना एक अलग बात है.

'कॉकरोच जनता पार्टी' (सीजेपी) को शायद जुलाई में विरोध प्रदर्शन के पहले दौर के बाद सरकार की कार्रवाई का अंदाजा था. हालांकि 10 अक्टूबर को जब उसके नेताओं का सामना किले में तब्दील हो चुकी नई दिल्ली में बैरिकेडिंग और हिरासत में लिए जाने की कार्रवाई से हुआ, तो इसका पैमाना उनकी उम्मीद से कहीं ज्यादा था.

सीजेपी की शुरुआत एक व्यंग्यात्मक ऑनलाइन आंदोलन के रूप में हुई थी. दरअसल, भारत के मुख्य न्यायाधीश सूर्यकांत ने एक अनौपचारिक टिप्पणी में बेरोजगार युवाओं को "कॉकरोच" कहा था. इसी के बाद यह आंदोलन शुरू हुआ. इसका नाम प्रधानमंत्रीनरेंद्र मोदी की सत्ताधारी भारतीय जनता पार्टी (बीजेपी) के तर्ज पर रख कर व्यंग्य किया गया है.

विरोध प्रदर्शनों के इस ताजा दौर में आंदोलनकारी मुख्य चुनाव आयुक्त ज्ञानेश कुमार के इस्तीफे की मांग कर रहे हैं. देशभर में मतदाता सूचियों के गहन पुनरीक्षण (एसआईआर) के बाद से कथित तौर पर 13 करोड़ से ज्यादा नाम हटाए जाने की बात है. हाल ही में एक अखबार की रिपोर्ट में दावा किया गया है कि सीईसी ने एसआईआर से जुड़े फैसलों में दूसरे आयुक्तों की सहमति नहीं ली. इसके बाद विपक्षी दलों ने और सीजेपी ने मुख्य चुनाव आयुक्त के इस्तीफे की मांग कर रहे हैं. [19, 20]

संदर्भ

1. सालिक, शेख; गांगुली, शोनाल (21 जुलाई 2026)। "पुलिस की कार्रवाई के बाद भारत के युवा नेतृत्व वाले तिलचट्टा आंदोलन ने सुधारों की मांग जारी रखने का संकल्प लिया" । एसोसिएटेड प्रेस । मूल से 22 जुलाई 2026 को संग्रहीत । 23 जुलाई 2026 को पुनः प्राप्त ।
2. ग्रीन, कॉनर (23 जुलाई 2026)। "भारत में जन विरोध प्रदर्शन कर रहे युवा नेतृत्व वाले 'तिलचट्टा आंदोलन' का क्या मतलब है?" । टाइम पत्रिका । मूल प्रकाशन 24 जुलाई 2026 को संग्रहित किया गया । 23 जुलाई 2026 को पुनः प्राप्त किया गया ।
3. मतीन, ज़ोया (21 मई 2026)। "भारतीय राजनीति को एक अनोखा शुभंकर मिल गया है: तिलचट्टा" । बीबीसी न्यूज़ । मूल से 21 मई 2026 को संग्रहीत । 21 मई 2026 को पुनः प्राप्त ।

4. "होमपेज" . कॉकरोच जनता पार्टी . 27 अक्टूबर 2026 को प्राप्त किया गया ।

5. "सीजेपी लीगल एड – सभी के लिए निःशुल्क कानूनी सहायता" । सीजेपी लीगल एड । मूल रूप से 12 अक्टूबर 2026 को संग्रहीत ।

6. स्वयंसेवक | कॉकरोच जनता पार्टी की आधिकारिक वेबसाइट। कॉकरोच जनता पार्टी । 27 अक्टूबर 2026 को प्राप्त किया गया ।

7. नंदा, शौकत; दास, अनुप्रीता (26 जुलाई 2026)। "वह आकस्मिक नायक जिसने भारत की सरकार का सामना किया" । द न्यूयॉर्क टाइम्स । 27 जुलाई 2026 को प्राप्त किया गया ।

8. "प्रशांत भूषण का कहना है कि मुख्य चुनाव आयुक्त के खिलाफ विरोध प्रदर्शन अब 'सत्ता परिवर्तन की लड़ाई' बन गया है, भाजपा ने 'षड्यंत्र' का आरोप लगाकर पलटवार किया।" . हिंदुस्तान टाइम्स . 16 अक्टूबर 2026.

9. "'असली काम का वक्त आ गया': बीजेपी के इंस्टाग्राम फॉलोअर्स की संख्या को पार करने के बाद कॉकरोच जनता पार्टी ने नया अभियान शुरू किया, 20 मिलियन फॉलोअर्स का आंकड़ा पार किया। द इकोनॉमिक टाइम्स । 22 मई 2026। 22 मई 2026 को प्राप्त किया गया ।

10. "'फर्जी डिग्रियों वालों के लिए तिलचट्टे वाली टिप्पणी,' मुख्य न्यायाधीश सूर्यकांत ने स्पष्टीकरण दिया। द क्विंट । 17 मई 2026। 6 जून 2026 को प्राप्त किया गया ।

11. शर्मा, सौरभ; दास, कृष्णा एन. (22 मई 2026)। "भारत का 'कॉकरोच' समूह वायरल हुआ, जनरेशन Z की चिंताओं पर प्रकाश डाला" । रॉयटर्स । 25 मई 2026 को प्राप्त किया गया ।

12. "सुप्रीम कोर्ट ने फर्जी कानून की डिग्रियों पर संदेह जताया, सीबीआई जांच की जरूरत हो सकती है" । द न्यू इंडियन एक्सप्रेस । 15 मई 2026। मूल लेख 6 जून 2026 को संग्रहित किया गया । 6 जून 2026 को पुनः प्राप्त किया गया ।

13. किशोर, उदयन (16 मई 2026)। "मीडिया द्वारा मेरे कथन को गलत तरीके से प्रस्तुत किए जाने से 'दुखी': मुख्य न्यायाधीश सूर्यकांत ने 'परजीवी' टिप्पणी पर स्पष्टीकरण जारी किया। द न्यू इंडियन एक्सप्रेस । मूल प्रकाशन 23 मई 2026 को संग्रहित । 6 जून 2026 को पुनः प्राप्त ।

14. अरोरा, कामना (16 मई 2026) ।'काले वस्त्रधारी हजारों लोग संदेह के घेरे में': मुख्य न्यायाधीश ने फर्जी विधि डिग्री को लेकर चिंता जताई, वकीलों के ऑनलाइन आचरण की आलोचना की । द स्टेट्समैन । 6 जून 2026 को प्राप्त किया गया ।

15. सप्पल, गुरदीप। "मुख्य न्यायाधीश ने उन्हें तिलचट्टे कहा। इतिहास जानता है कि उस भाषा का क्या परिणाम होता है । " द वायर । 6 जून 2026 को प्राप्त किया गया ।

16. नीलकांतन, आनंद (31 मई 2026)। "तिलचट्टों से ग्रस्त व्यवस्था की परेशानियाँ" । द न्यू इंडियन एक्सप्रेस । मूल से 1 जून 2026 को संग्रहित । 6 जून 2026 को पुनः प्राप्त ।

17. रिज़वान, हेरा (18 मई 2026)। "तिलचट्टे जनता पार्टी: कैसे मुख्य न्यायाधीश की एक टिप्पणी एक आंदोलन बन गई" । बूम । मूल से 19 मई 2026 को संग्रहीत । 19 मई 2026 को पुनः प्राप्त ।

18. "अपने 'तिलचट्टे' और 'परजीवी' वाले बयान पर मचे बवाल के बाद, मुख्य न्यायाधीश सूर्यकांत ने कहा कि मीडिया ने उनके बयान को 'गलत तरीके से पेश' किया है।" द वायर । 16 मई 2026। 6 जून 2026 को प्राप्त किया गया ।

19. "'तिलचट्टा आंदोलन' भारत के आक्रोशित युवाओं की आवाज बनता है। डीडब्ल्यू न्यूज । मूल लेख 6 जून 2026 को संग्रहित किया गया । 6 जून 2026 को पुनः प्राप्त किया गया ।

20. भट्टाचार्य, स्निग्धेंदु। "तिलचट्टा जनता पार्टी: क्या मोदी सरकार 'जेनरेशन जेड विद्रोह' से सावधान है?" । द डिप्लोमैट । मूल प्रकाशन 22 जुलाई 2026 को संग्रहित किया गया । 22 जुलाई 2026 को पुनः प्राप्त किया गया ।